प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शिक्षकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्न

जिगिशा शास्त्री

पिछले कुछ सालों में बहुत सारे जिज्ञासु, सीखने की चाहत रखने वाले, तथा छोटे बच्चों को पढ़ाने के काम को बेहतर ढंग से करने के इच्छुक शिक्षकों से मिलना हुआ। उनसे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर चर्चा के दौरान बहुत सारे प्रश्न मिले। ये प्रश्न उनके रोज़मर्रा के कामों से जुड़े हुए थे। यहाँ कुछ ऐसे ही प्रश्न साझा किए जा रहे हैं जिन्हें सबसे ज़्यादा पूछा जाता रहा है। ये प्रश्न सभी ईसीई शिक्षकों के लिए समान हैं, चाहे वे आँगनवाड़ी केन्द्रों में पढ़ाते हों या ज़्यादा संसाधनों वाली पूर्व प्राथमिक शालाओं में।

प्रश्न : हर कोई इस बात पर ज़ोर देता है कि हम बच्चों को खेलने दें। चाहे ईसीई विशेषज्ञ हों या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, *दोनों ही खेल पर ज़ोर देते हैं। लेकिन हमें बच्चों के सीखने के प्रतिफलों को पूरा करना होता है, और साप्ताहिक योजनाओं का भी क्रियान्वयन करना होता है। अगर हम बच्चों को खेलने देंगे तो उन्हें जो 'सिखाना' चाहते हैं, उसे कब पूरा करेंगे?*

उत्तर : खेल बच्चों के लिए बेहद स्वाभाविक गतिविधि है। पालने में लेटा हुआ बच्चा ऊपर लटकते हुए खिलौने से खेलता है। कक्षा में बच्चा दरी / कालीन के धागों से खेलता है, वस्तुओं को छूता है, लुढ़काता है, फेंकता है, सूँघता है। वे अकेले खेलते हैं, अपने साथियों, भाई-बहनों और बड़ों के साथ भी खेलते हैं। खेलते समय बच्चों का समग्र विकास होता है। वे सोचते हैं, अपनी शारीरिक क्रियाओं का उपयोग करते हैं, दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करते हैं, और एक दूसरे से बात करते हैं; इस प्रकार संज्ञानात्मक, शारीरिक, गत्यात्मक, सामाजिक और भाषा विकास सम्बन्धी प्रक्रियाएँ होती हैं। खेलते समय, वे निर्णय लेते हैं, नियम तय करते हैं, कल्पना करते हैं, और कुछ जानने को उत्सुक होते हैं। इसलिए सीखने के प्रतिफलों और पाठ योजनाओं को ध्यान में रखते हुए हमें ऐसे अनुभवों और गतिविधियों की योजना बनानी होगी जहाँ वे अपने शरीर को हिला-डुला सकें, सोच सकें, बात कर सकें, और एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया कर सकें। ऐसा करने से, हमने जिस गतिविधि / अनुभव की योजना बनाई है, वह उनके लिए खेल बन जाएगी। यही नहीं, हमें उन्हें कक्षा के अन्दर और बाहर भी कक्षा सामग्री के साथ खुलकर खेलने का समय देना होगा। खेलते समय सीखने के कई उद्देश्य पूरे होंगे। शिक्षक के रूप में, हमें हर समय बच्चों के सीखने को लेकर चिन्तित होने और उन पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। वे ख़ुद खेलेंगे, और सीखेंगे। हाँ, हमें उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना होगा, उन पर नज़र रखनी होगी ताकि उन्हें चोट न लगे।

प्रश्न : प्ले-वे विधि क्या है?

उत्तर : प्ले-वे विधि में बच्चों के लिए ऐसी गतिविधियाँ तैयार की जाती हैं जिनसे वे पूरी तरह से जुड़ सकें; अपनी पाँचों इन्द्रियों

> **प्ले-वे विधि में शिक्षक ऐसे तरीक़ों का उपयोग करते हैं जहाँ बच्चों को अपनी जिज्ञासा शान्त करने का अवसर मिलता है। उनके पास यह चुनने का विकल्प होता है कि वे कौन-सी गतिविधियाँ करें।**

का उपयोग करके काम कर सकें; एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और बातचीत कर सकें। इस विधि में वे शारीरिक और मानसिक, दोनों रूप से गतिविधियों में शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, जानवरों के बारे में समझने का एक तरीक़ा यह हो सकता है कि बच्चों से जानवरों के नाम पूछें, उन्हें याद करवाएँ, और चार्ट पर चित्र दिखाएँ। प्ले-वे विधि में शिक्षक गीतों के माध्यम से भी जानवरों का परिचय करा सकते हैं। गाते समय, बच्चे गीत में आने वाले प्रत्येक जानवर की तरह अभिनय कर सकते हैं, उसकी आवाज़ निकाल सकते हैं। इस विधि में शिक्षक ऐसे तरीक़ों का उपयोग करते हैं जहाँ बच्चों को अपनी जिज्ञासा शान्त करने का अवसर मिलता है। उनके पास यह चुनने का विकल्प होता है कि वे कौन-सी क्रियाएँ करें। उनका चुनाव वे स्वयं करते हैं। बच्चों को विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करने देना और उनसे सीखने देना—उदाहरण के लिए, चित्र कार्डों का मिलान करना, पहेली जोड़ना, एक दूसरे से प्रश्न पूछना और सीखना, कहानियाँ सुनाना, विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाना जैसी गतिविधियाँ प्ले-वे का ही हिस्सा हैं।

प्रश्न : लर्निंग कॉर्नर क्या हैं? हम अपनी कक्षाओं में इन्हें कैसे स्थापित कर सकते हैं?

उत्तर : 3 से 8 वर्ष की आयु के छोटे बच्चे खिलौनों, खेल सामग्री और अन्य शिक्षण सामग्री के साथ खेलते हुए सीखते हैं। इन सामग्रियों में पहेलियाँ, ब्लॉक, जोड़-तोड़ वाली वस्तुएँ

(manipulatives), जैसे विभिन्न प्रकार के ब्लॉक, अलग-अलग तरह के आकार आदि शामिल होती हैं। इनमें क्रमबद्धता बॉक्स, गिनती किट, मिलान कार्ड, अनुक्रम कार्ड, विभिन्न बुनावट के कपड़े के टुकड़े, ध्वनि बॉक्स, और यहाँ तक कि साँप-सीढ़ी, आदि जैसे सरल खेल भी सम्मिलित रहते हैं। सप्ताह के लिए निर्धारित सीखने के प्रतिफलों के आधार पर शिक्षक यह चुन सकते हैं कि बच्चों द्वारा खोज-बीन करने के लिए कौन-सी सामग्री रखी जाए। उदाहरण के लिए, यदि किसी सप्ताह, सीखने का प्रतिफल बुनियादी आकृतियों की पहचान करना है तो वर्ग, त्रिभुज और वृत्त जैसी बुनियादी आकृतियों वाले दो-दो कार्ड एक छोटे-से बॉक्स में रखे जा सकते हैं। बच्चे समान आकृति वाले कार्डों को उठाकर एक साथ रखने का प्रयास कर सकते हैं। इस दौरान कार्यकर्त्री बच्चों का ध्यान रखती हैं, आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करती हैं, तथा उन्हें प्रोत्साहन, संकेत और सुझाव देती हैं। शिक्षक उनके साथ खेल भी सकते हैं।

कक्षा में इस सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए सामग्री के उद्देश्य और उपयोग के आधार पर, सबसे पहले उनको वर्गीकृत / समूहबद्ध करना होगा—विभिन्न प्रकार के सभी ब्लॉक एक साथ रखे जाएँ। यही काम किताबों, फ़्लैश कार्डों, चित्र कार्डों, आदि के लिए भी करना होगा। सामग्री छाँटने के बाद, उसे कक्षा के अलग-अलग कोनों या स्थानों पर रखें। यदि कमरा छोटा है तब सामग्री को बक्सों में रखा जा सकता है। यदि कक्षा का कमरा बड़ा है तब सभी सामग्रियाँ अलग-अलग कोनों में व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित की जा सकती हैं। खुली अलमारियों का उपयोग करें, सामग्री को खुले बक्सों या टोकरियों में रखें जहाँ बच्चे उन्हें देख सकें, और उठा सकें।

बच्चे सामग्री के साथ खेल पाएँ, इसके लिए विद्यालय के बरामदों का उपयोग भी किया जा सकता है। खेल का समय समाप्त होने पर शिक्षक बच्चों की मदद से उन सामग्रियों को निर्धारित स्थान पर वापस रख सकते हैं।

विभिन्न कोने भी बनाए जा सकते हैं। सबसे सामान्य कोने हैं—ब्लॉक कोना, जोड़-तोड़ कोना, भाषा या पुस्तक कोना, गुड़िया या नाटकीय खेल कोना। साथ में कला कोना, विज्ञान कोना या संगीत कोना भी बनाया जा सकता है।

> अलग-अलग कोनों में रखी हुई सामग्रियों को पूरे हफ़्ते बच्चों के इस्तेमाल के लिए वहीं रख देना चाहिए। तब हम आश्वस्त हो सकते हैं कि लगभग सभी बच्चे उस सामग्री को अच्छी तरह से समझ पाएँगे। अगर कुछ बच्चे उनका बार-बार इस्तेमाल करना चाहें तो वे ऐसा कर पाएँगे। हर हफ़्ते आप कोई नई सामग्री जोड़ सकते हैं, और जब आपको लगे कि कोई सामग्री लम्बे समय से इस्तेमाल हो रही है, आप उसे हटा सकते हैं। ऐसा बदलाव करने से सामग्रियों के इस्तेमाल में विविधता आती है, और रुचि बनी रहती है।

एक बार फिर, मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगी कि सीखने के कोने का उद्देश्य कक्षा में सामग्री को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करना है ताकि बच्चे इन सामग्रियों से अकेले, जोड़ों

चित्र 1: व्यवस्थित और आकर्षक सीखने के कोने से बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी जुड़ते हैं

चित्र 2 : बच्चों को अपनी पसन्द की किताबों को पढ़ना और ब्लॉक से खेलने देना ज़रूरी है

में या समूहों में जुड़ सकें। इस दौरान शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते रहें।

प्रश्न : मैं बच्चों को सामग्री से खेलने, उसे उपयोग में लेने के लिए कैसे प्रोत्साहित करूँ? अगर बच्चे एक ही सामग्री का इस्तेमाल करते रहें तो क्या होगा? अगर वे एक कोने से दूसरे में चले जाएँ, और सामग्री के इस्तेमाल पर ध्यान न दें तो क्या होगा?

उत्तर : जब हम सामग्री को प्रदर्शित करते हैं, और उसे इस तरह रखते हैं कि बच्चे उसे आसानी से उठा सकें, तब बच्चे को लगेगा कि यह चीज़ उसे आसानी से मिल रही है, और यह बात उन्हें उसका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। याद रखें, बच्चे जिज्ञासु होते हैं, उन्हें खिलौनों और सामग्रियों से खेलना पसन्द होता है। वे अपनी इन्द्रियों का उपयोग करना पसन्द करते हैं। कार्यकर्त्री के रूप में हम नई सामग्री चुन सकते हैं, और बड़े समूह में या सर्कल टाइम के दौरान बच्चों को उससे परिचित करा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक ऐसी मिलान किट है जिसमें आपस में मेल खाने वाली चीज़ें रखी हैं तो उन्हें वे चीज़ें दिखाएँ, और फिर उनसे अनुमान लगाने को कहें कि कौन-सी चीज़ किसके साथ मेल खाएगी। टोकरी में रखा एक छोटा-सा ताला उठाएँ, और पूछें कि उसे खोलने के लिए उन्हें क्या चाहिए। जब कोई बच्चा 'चाबी' कहे तो उसे चाबी ढूँढ़ने, और दोनों वस्तुओं को एक साथ रखने को कहें। इसी तरह, जूते और मोज़े, छोटा कप और प्लेट, आदि जैसी टोकरी में रखी कुछ और चीज़ों का मिलान करने के लिए भी कह सकते हैं।

बच्चों की अपनी पसन्द भी होती है। कुछ बच्चों को किताबें पढ़ना, पन्ने पलटना और तस्वीरें देखना अच्छा लग सकता है। कुछ ब्लॉक से आकृतियाँ बनाना पसन्द करते हैं। वे अपनी पसन्दीदा चीज़ों से बार-बार खेलना पसन्द करते हैं। यह अच्छी बात है। किसी चीज़ को बार-बार करने से वे उसमें 'विशेषज्ञ' बन जाएँगे। साथ ही, अगर आपको लगता है कि वे एक महीने से ज़्यादा समय से एक ही चीज़ से खेल रहे हैं तब उन्हें दूसरी चीज़ों के इस्तेमाल का सुझाव दें। जिस बच्चे को तस्वीरें देखना पसन्द है, उसे ब्लॉक का इस्तेमाल करके किताब में दिखाई गई कोई इमारत या गाड़ी बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप उन कोनों के पास बच्चों के नाम के कार्ड या छोटे बच्चों की तस्वीरें भी रख सकते हैं, जहाँ आप उन्हें उस दिन ले जाना चाहते हैं। सुनिश्चित करें कि आप उन्हें पूरे हफ़्ते के दौरान हर कोने को देखने का मौक़ा दें। ऐसा करने के दूसरे रचनात्मक तरीक़ों के बारे में भी सोचें। उदाहरण के लिए, बच्चों से कहिए कि वे कोनों के नाम वाली चिटें उठाएँ। उनकी चिट पर जिस कोने का नाम लिखा हो, उस कोने में जाएँ।

> **सीखने के कोने का उद्देश्य कक्षा में सामग्री को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करना है ताकि बच्चे इन सामग्रियों से अकेले, जोड़ों में या समूहों में जुड़ सकें। इस दौरान शिक्षक उनका मार्गदर्शन करते रहें।**

बहुत छोटे और कुछ बड़े बच्चे भी निर्धारित 20 या 30 मिनट तक एक कोने में बैठना पसन्द नहीं करते। इसलिए उन्हें कक्षा

में घूमने-फिरने का मौक़ा दें। 3 साल की उम्र के ज़्यादातर बच्चे एक ही सामग्री के साथ पूरे 20 या 30 मिनट नहीं खेल सकते। चूँकि छोटे बच्चों की ध्यान की अवधि कम होती है, हो सकता है कि वे 10 मिनट तक उसके साथ खेलें, और फिर दूसरी सामग्री उठा लें। जैसे-जैसे वे 3 से 6 साल की उम्र में पहुँचते हैं, उन्हें एक ही सामग्री के साथ ज़्यादा समय बिताना चाहिए।

प्रश्न : मुझे कई भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। अपने समय का प्रबन्धन कैसे करूँ?

उत्तर : प्रारम्भिक बाल्यावस्था कक्षा की शिक्षिका और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को कई अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। इन सभी कार्यों को सन्तुलित करने की जद्दोजहद में ईसीई कार्यक्रम की गतिविधि उपेक्षित हो जाती है। हम, बिना किसी उद्देश्य के, बच्चों को उनकी इच्छानुसार कार्य करने के लिए छोड़ देते हैं।

इस स्थिति में सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है।

1. अपने कार्यों को प्राथमिकता दें। तय करें कि कौन-से कार्य दैनिक, साप्ताहिक या मासिक रूप से करने हैं।
2. अपने लिए एक समय सारिणी बनाएँ। इससे बेहतर योजना बनाने में मदद मिलेगी।
3. दैनिक समय सारिणी में सबसे पहले ईसीई कार्यक्रम का समय निर्धारित करें। उदाहरण के लिए, सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक।
4. अब अन्य कार्यों की योजना बनाना शुरू करें। विद्यालय के दिन की शुरुआत में और अन्त में अभिभावकों के साथ ऐसी बातचीत करनी हो सकती है, जो पहले से तय न हुई हो। विद्यालय के बाद अभिभावकों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए 15 मिनट का समय निकालें। हर शनिवार को 2 घण्टे का समय रखें जब अभिभावक बिना किसी पूर्व सूचना के आकर आपसे बात कर सकें।
5. घर और समुदाय के दौरे दोपहर में, जब बच्चे सो रहे हों, या विद्यालय के समय के बाद, या शनिवार को किए जा सकते हैं। (मैं यह मानकर चल रही हूँ कि शाला-पूर्व आयु के बच्चों के विद्यालय में शनिवार को अवकाश रहता है।)
6. आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के लिए—सुबह 9 से दोपहर 12 बजे के बीच 15 मिनट का ब्रेक लें। बच्चों की देखभाल के लिए सहायिका की मदद लें। अपने तात्कालिक कार्य करें। मसलन, उन 15 मिनटों में कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी भेजना। बच्चों के जाने के बाद या उनके सोने के दौरान नियमित रिकॉर्ड रखने, आदि जैसे बाक़ी कार्य किए जा सकते हैं।

खेल एक ऐसा स्वाभाविक तरीक़ा है, जिसके माध्यम से बच्चे अपने आस-पास की भौतिक और सामाजिक दुनिया के साथ अन्तःक्रिया करते हैं। हम उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण वयस्क होने के नाते खेल को प्रोत्साहित करें। हम देखते हैं कि बच्चे घण्टों खेल में डूबे रहते हैं। खेल सामग्री या शिक्षण सामग्री भी बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोज-बीन करने, प्रयोग करने और सीखने में मदद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए यदि हम छोटे बच्चों की कक्षाओं में खेल के साथ-साथ सावधानीपूर्वक चुनी गई सामग्री को भी शामिल कर सकें तो बहुत लाभ होगा।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

जिगिशा शास्त्री अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा संकाय की अतिथि सदस्य हैं। ईसीसीई विशेषज्ञ के रूप में उन्हें चार दशकों से अधिक का अनुभव है। साथ ही वे निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के ईसीसीई कार्यक्रमों की संकल्पना और सहयोग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं।

सम्पर्क : jigisha.shastri@apu.edu.in